कुछ आर्थिक समस्याएं

शिवदास घोष

कुछ आर्थिक समस्याएं

स्तालिन की सुविख्यात पुस्तक 'यूएसएसआर में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं में उनकी आर्थिक प्रस्थापनाएं, सोवियत पार्टी और राजसत्ता का नेतृत्व संशोधनवादी ख्रुश्चेव गुट द्वारा हथिया लिये जाने के बाद कई सोवियत अर्थशास्त्रियों द्वारा आक्रमण का निशाना बनायी गयी हैं। उनके विचार से ये प्रस्थापनाएं 'पूर्णत गलत' थीं। 'कुछ आर्थिक समस्याएं' लेख में स्तालिन की प्रस्थापनाओं के वैज्ञानिक आधार की व्याख्या की गयी है जो इस मुद्दे पर संशोधनवादी विकृतियों के खिलाफ एक स्पष्ट दृष्टिकोण प्रदान करती है।

अभी हाल ही में कुछ लेखकों ने स्तालिन द्वारा पेश किये गये आर्थिक प्रतिपादनों के खिलाफ सचमुच ही एक निन्दा अभियान छेड़ दिया है। स्तालिन द्वारा प्रतिपादित विभिन्न आर्थिक सिद्धान्तों पर मुख्यत: और विशेषत: लक्षित एक दर्जन से ज्यादा लेख विभिन्न मुखपत्रों में आधे साल से भी कम समय में छप चुके हैं। इन में एम. एटलस, एल. केडीशेव, एम.मेकारोव, जी. सारोकिन और पी. फिगुर्नोफ द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत और *'वोप्रोसी इकोनोमिकी' Voprosy Ekonomiki* के अंक में 1962 में प्रकाशित *'बुनियादी आर्थिक नियम'* शीर्षक से एक शोध निबंध शामिल है। इस निबंध के लेखकों ने अन्य बातों के अलावा यह भी कहा है: ''...आर्थिक सिद्धान्त के क्षेत्र में सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सभी लोगों की सम्पत्ति के स्तर तक उन्नत करने, माल यानी पण्य-वस्तुओं के परिचलन को संकुचित करने और इसकी जगह वस्तु-विनिमय (barter) चालू करने के तौर-तरीके से संबंधित सवाल पर स्तालिन ने गंभीर गलतियां कीं; उन्होंने यह पुष्टि करके गलती की कि समाजवादी व्यवस्था में जनता की क्रय शक्ति सदा वास्तविक उत्पादन से ज्यादा होती जानी चाहिए; ...उनकी यह प्रस्थापना भी उतनी ही गलत थी कि विकसित पूंजीवादी देशों में उत्पादन की सकल मात्रा (overall volume of production) युद्धोत्तर काल में घट जानी लाजिमी है, आदि।'' इस निबंध में उन्होंने पूंजीवाद और समाजवाद के बुनियादी आर्थिक नियमों की भी चर्चा की है और स्तालिन को उनकी कृति *'Economic*

Problems of Socialism in U.S.S.R' 'सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं' में पूंजीवाद के बुनियादी आर्थिक नियमों के बारे में ''पूर्णत: गलत'' विचार प्रचारित करने का दोषी माना है।

न केवल पूंजीवादी उत्पादन बल्कि समाजवादी उत्पादन की भी अनिवार्य लाक्षणिकताओं को समझने के लिए और, इससे भी ज्यादा स्तालिन जिन्हें लम्बे अरसे से अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन में एक अथोरिटी का दर्जा प्राप्त है, उनकी अथोरिटी को गौण करने के लिए उनके खिलाफ इन लेखकों द्वारा की गयी आलोचना के पीछे असली उद्देश्य को समझने के लिए भी ये मामले परम महत्त्व के हैं। इसलिए उनका ध्यान से और बारीकी से अध्ययन करने की जरूरत है।

बुनियादी आर्थिक नियम

हर सामाजिक संरचना विशेष का अपना बुनियादी आर्थिक नियम होता है जो उस सामाजिक संरचना की कुछ विशेष लाक्षणिकताओं या उत्पादन के विकास की विशेष प्रक्रियाओं को ही नहीं, बल्कि इसके विकास के सभी प्रधान पहलुओं और सभी प्रधान प्रक्रियाओं को तय करता है। इसलिए एक निर्दिष्ट सामाजिक संरचना का बुनियादी आर्थिक नियम इसके समूचे विकास-क्रम, इसके उत्पादन के सारतत्व और इसकी अनिवार्य लाक्षणिकता को निर्धारित करता है। मार्क्सवादी भौतिकवादी द्वन्द्व-सिद्धान्त हमें सिखाता है कि ''किसी वस्तु के विकास की प्रक्रिया में निहित मूल अंतर्विरोध और इस मूल अंतर्विरोध द्वारा निर्धारित उस प्रक्रिया की चारित्रिक विशेषता तब तक समाप्त नहीं होगी, जब तक कि वह प्रक्रिया पूरी नहीं हो जाती, किन्तु किसी वस्तु के विकास की लम्बी प्रक्रिया में प्रत्येक मंजिल की परिस्थितियां अक्सर दूसरी मंजिल से भिन्न होती हैं। ऐसा इसलिए होता है कि किसी वस्तु के विकास की प्रक्रिया में निहित मूल अंतर्विरोध का स्वरूप और उस प्रक्रिया की चारित्रिक विशेषता यद्यपि नहीं बदलती, फिर भी विकास की लम्बी प्रक्रिया की विभिन्न मंजिलों में मूल अंतर्विरोध उत्तरोत्तर तीव्र रूप धारण करता जाता है। इसके अलावा, मूल अंतर्विरोध द्वारा निर्धारित या प्रभावित अनेक छोटे-बड़े अंतर्विरोधों में से कुछ अंतर्विरोध तीव्र रूप धारण कर लेते हैं, तो कुछ अस्थायी अथवा आंशिक रूप से हल हो जाते हैं या मन्द पड़ जाते हैं; और कुछ नये अंतर्विरोध सामने आ जाते हैं; इसलिए यह प्रक्रिया भिन्न-भिन्न मंजिलों से गुजरती हुई प्रकट होती है।'' (*अंतर्विरोध के*

बारे में, माओ-त्से-तुंग, पृष्ठ 29) बुनियादी आर्थिक नियम सहित आर्थिक नियमों की चर्चा करते समय भी सभी कम्युनिस्टों को इस द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दृष्टिकोण से परिचालित होना चाहिए। इस तरह, हालांकि एक सामाजिक संरचना विशेष का बुनियादी आर्थिक नियम उस सामाजिक संरचना की समूची अवधि के दौरान बुनियादी तौर पर अपरिवर्तित रहता है, फिर भी आर्थिक विकास की ठोस स्थितियां इस लम्बी अवधि के दौरान परिवर्तनों से गुजरती हैं जिसके लिए उसी सामाजिक संरचना के विभिन्न स्तरों पर बुनियादी आर्थिक नियम की अलग (बुनियादी तौर पर अलग नहीं) अर्थात उन्नत व सटीक समझदारी होनी चाहिए।

उदाहरण के लिए, आइए पूंजीवादी समाज पर विचार किया जाये। पूंजीवाद का बुनियादी आर्थिक नियम क्या है? साफ जाहिर है कि यह मूल्य का नियम नहीं हो सकता।

क्योंकि, मूल्य का नियम मुख्यत: माल-उत्पादन का नियम होता है जो पूंजीवाद से पहले भी विद्यमान था, पूंजीवाद में भी विद्यमान रहता है और जब पूंजीवाद उखाड़ फेंक दिया जायेगा तथा समाजवाद कायम कर दिया जायेगा तब भी वह जारी रहेगा अर्थात जब तक इसकी मुद्रा-अर्थनीति सहित माल-उत्पादन चलता रहेगा तब तक विभिन्न देशों में पूंजीवाद के असमान विकास का नियम या पूंजीवादी प्रतियोगिता और अराजकतापूर्ण उत्पादन का नियम भी पूंजीवाद का बुनियादी आर्थिक नियम नहीं हो सकता। क्योंकि, इन नियमों से हरेक ही हालांकि पूंजीवादी उत्पादन के किसी खास पहलू को प्रकट करता है, परन्तु उनमें से कोई भी पूंजीवादी उत्पादन की प्रधान लाक्षणिकता, इस की मूल प्रकृति को प्रकट नहीं करता है। *'सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं'* कृति में स्तालिन द्वारा निरूपित पूंजीवाद का बुनियादी आर्थिक नियम निम्नलिखित है: ''पूंजीवाद के बुनियादी आर्थिक नियम की अवधारणा का सब से सही विशेषता सूचक है अतिरिक्त मूल्य का नियम जो पूंजीवादी मुनाफे की उत्पत्ति और विकास का नियम है। यह वास्तव में ही पूंजीवादी उत्पादन की मूलभूत विशेषताओं को निर्धारित करता है। लेकिन अतिरिक्त मूल्य का नियम बहुत ही सामान्य नियम है जिसके अन्तर्गत मुनाफे की उच्चतम दर की समस्या नहीं आती, जिस दर को अर्जित करना एकाधिकारी पूंजीवाद के विकास की एक शर्त है। इस कमी को पूरा करने के लिए अतिरिक्त मूल्य के नियम को एकाधिकारी पूंजीवाद की स्थितियों की संगति में लाने के लिए और अधिक ठोस व

उन्नत करना होगा। ऐसा करते समय इस बात को भी ध्यान में रखना होगा कि एकाधिकारी पूंजीवाद किसी भी तरह का मुनाफा नहीं, बल्कि स्पष्ट तौर पर अधिकतम मुनाफा चाहता है। यही है आधुनिक पूंजीवाद का बुनियादी आर्थिक नियम।'' (पृष्ठ 43)

हम समझते हैं कि यह पूंजीवाद के बुनियादी आर्थिक नियम के तौर पर अतिरिक्त मूल्य के नियम को नकारता नहीं है जहां तक कि पूंजीवादी उत्पादन का प्रत्यक्ष उद्देश्य अतिरिक्त मूल्य या इसके विकसित रूप में मुनाफा पैदा करना है। मार्क्स ने खुद कहा है; ''पूंजीवादी उत्पादन का प्रत्यक्ष उद्देश्य सामानों का उत्पादन नहीं, बल्कि अतिरिक्त मूल्य या *इसके विकसित रूप में* (जोर हमारा) मुनाफे का उत्पादन करना है, उत्पाद नहीं बल्कि अतिरिक्त उत्पाद... अधिकतम अतिरिक्त मूल्य (या इसके विकसित रूप में अधिकतम मुनाफा) या न्यूनतम पूंजी निवेश से अतिरिक्त उत्पाद पैदा करना पूंजीवादी उत्पादन का स्थिर उद्देश्य है। ''(कार्ल मार्क्स, *अतिरिक्त मूल्य के सिद्धान्त, पूंजी-खंड 4, भाग दो, पृ. 552*, अंग्रेजी)। मार्क्स द्वारा प्रयुक्त अभिव्यक्ति "अधिकतम अतिरिक्त मूल्य" साफ तौर पर यह सुझाती है कि अधिकतम अतिरिक्त मूल्य में उच्चतम मुनाफा भी समाहित है। लेकिन "एक अतिरिक्त मूल्य के साथ विभिन्न कारक मुनाफे की दर को बढ़ा या घटा और आम तौर पर प्रभावित भी कर सकते हैं" (वही, पृष्ठ 376) और "...मुनाफे की दर अतिरिक्त मूल्य की दर के नियमों से ही प्रत्यक्ष तौर पर नियंत्रित नहीं होती है।'' (वही, पृष्ठ 426)। अत: ''...अतिरिक्त मूल्य के नियम-या यूं कहें कि अतिरिक्त मूल्य की दर के नियम (कार्य दिवस को जैसा दिया है वैसा ही मानते हुए) न तो मुनाफे के नियम से सीधे और सरल तौर पर इतने मेल खाते हैं और न ही इस पर वे लागू होते हैं..." (वही, पृ. 426) अत: इस बिन्दु को देखने से चूक नहीं सकते कि एकाधिकारी पूंजीवाद की स्थिति के अनुकूल ढलने में अधिकतम मुनाफे की दर वैसी ही नहीं होती है जैसी मुनाफे की उच्चतर दर प्राक्-एकाधिकारी पूंजीवाद में मौजूद स्थितियों के तहत पूंजीपति अर्जित कर सकते थे। प्राक्-एकाधिकारी पूंजीवाद की स्थितियों के तहत पूंजीपति मुनाफे की जो उच्चतम दर अर्जित कर रहे थे और एकाधिकारी पूंजीवाद की वर्तमान दिनों की स्थितियों के तहत पूंजीपति मुनाफे की जो उच्चतम दर अर्जित कर रहे हैं, उन दोनों को लेकर सटीक समझदारी हासिल करने के लिए स्तालिन की उपरोक्त प्रस्थापना उस दिशा में महज एक सविस्तार व्याख्या और विकास है।

मुनाफे की औसत दर का जो नियम प्राक्-एकाधिकारी पूंजीवाद की अवस्था में मुख्यत: काम कर रहा था उसकी खासकर औद्योगिक क्रांति के दौरान या बाद में कैसे व्याख्या की जाये? इसे ऐसा न समझा जाये कि प्राक्-एकाधिकारी पूंजीवाद ने स्वेच्छापूर्वक मुनाफे की अधिकतम दर की बलि चढ़ा दी थी और अपने आपको मुनाफे की औसत दर से सन्तुष्ट कर लिया था। इसको ऐसा भी नहीं समझा जाये कि प्राक्-एकाधिकारी पूंजीवाद का उद्देश्य अधिकतम अतिरिक्त मूल्य पैदा करना और मुनाफे की अधिकतम दर अर्जित करना नहीं था। इसके उलट, इसको ऐसा समझा जाये कि तत्कालीन विशिष्ट स्थितियों में मुनाफे की औसत दर मुनाफे की वह अधिकतम दर थी जो प्राक्-एकाधिकारी पूंजीवाद उन हालातों में प्राप्त कर सकता था। अतिरिक्त मूल्य का नियम और अधिकतम मुनाफे के नियम को प्राक्-एकाधिकारी और एकाधिकारी दोनों अवस्थाओं में मौजूद तत्कालीन ठोस परिस्थितियों के संबंध में, पूंजीवादी समाज के विकास की प्रक्रिया में ठोस रूप में ऐसा ही समझना चाहिए।

लेकिन चूंकि कुछ सोवियत अर्थशास्त्री गलती से इस विचार से चिपटे हुए थे कि अतिरिक्त मूल्य के नियम का मतलब है आधुनिक या एकाधिकारी पूंजीवाद में भी मुनाफे की औसत दर के नियम के रूप में काम करने वाला अतिरिक्त मुनाफे का नियम और चूंकि उन्होंने हठपूर्वक मान लिया कि मुनाफे की औसत दर का नियम पूंजीवाद का बुनियादी नियम है, जबकि स्तालिन ने अतिरिक्त मूल्य के नियम और मुनाफे के नियम की समझदारी को और भी सटीक व ठोस बनाने के लिए उपरोक्त विस्तारित व्याख्या सुझायी थी। अगर कोई इससे यह समझे कि मुनाफे की औसत दर का नियम तो प्राक्-एकाधिकारी पूंजीवाद का बुनियादी आर्थिक नियम था, जबकि मुनाफे की अधिकतम दर का नियम एकाधिकारी पूंजीवाद का बुनियादी आर्थिक नियम है और इस तरह एक सामाजिक संरचना विशेष के तहत दो-दो बुनियादी आर्थिक नियमों के अस्तित्व का विचार पेश कर रहा है तो इसके लिए उसके भ्रमित चिंतन को ही दोषी ठहराया जायेगा। लेकिन बड़े ताज्जुब की बात है कि 'बुनियादी आर्थिक नियम' के लेखकों ने स्तालिन काल के कुछ सोवियत अर्थशास्त्रियों के भ्रमित चिंतन के लिए स्तालिन की भर्त्सना कर डाली है। वे कहते हैं: "जे. वी. स्तालिन की कृति 'सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं' द्वारा हमारे आर्थिक साहित्य पर डाले गये प्रभाव की वजह से कुछ कालावधि के लिए इस भ्रमजाल को फैला दिया गया कि अतिरिक्त मुनाफे का नियम ही

प्राक्-एकाधिकारी पूंजीवाद का बुनियादी आर्थिक नियम है, जबकि साम्राज्यवाद के युग में एक और नियम कथित रूप से काम करने लगता है जिसको अधिकतम मुनाफा अर्जित करने का नियम कहते हैं। सवाल उठाने का यह ढंग पूर्णत: गलत है। ऐसे कोई दो बुनियादी आर्थिक नियम नहीं होते हैं और न ही हो सकते हैं: एक पूंजीवाद की शुरुआती अवस्थाओं के लिए और दूसरा इसकी उच्चतर अवस्था–साम्राज्यवाद के लिए। हर सामाजिक संरचना का केवल एक ही बुनियादी आर्थिक नियम होता है, चाहे यह विकास की जिस भी अवस्था में हो।'' एल. डी. यारोशेंको के इस दावे के जवाब में कि समाजवाद के कई बुनियादी आर्थिक नियम हो सकते हैं, स्तालिन ने जो कहा था, यह तो उसी की प्रतिध्वनि है। लेकिन साथ ही यह एक खास सामाजिक संरचना के एक से ज्यादा बुनियादी आर्थिक नियम हो सकते हैं–इस भ्रामक विचार के लिए स्तालिन पर दोष मढ़ना है। स्तालिन ने यारोशेंको के गलत मत की भर्त्सना करते हुए कहा था: "किसी विशेष सामाजिक संरचना के बुनियादी आर्थिक नियम के बारे में बात करते समय आमतौर पर यह माना जाता है कि उसमें कई बुनियादी आर्थिक नियम नहीं होंगे, कि उसमें कोई एक ही बुनियादी आर्थिक नियम होगा और सटीक रूप से इसी वजह से उसे बुनियादी आर्थिक नियम कहा जाता है। अन्यथा हमारे पास हरेक सामाजिक संरचना के लिए अनेक बुनियादी आर्थिक नियम हो जाने चाहिएं, जो कि बुनियादी नियम की अवधारणा के ही विपरीत होगा। लेकिन कॉमरेड यारोशेंको इससे सहमत नहीं हैं। वे समझते हैं कि समाजवाद के एक नहीं, बल्कि अनेक बुनियादी आर्थिक नियम हो सकते हैं। यह बात आश्चर्यजनक है ..." *(सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं, पृष्ठ 82, अंग्रेजी)*। क्या यह ऐसा भ्रम पैदा कर रहा है कि एक विशेष सामाजिक संरचना के एक से ज्यादा बुनियादी आर्थिक नियम होते हैं या इस गलत धारणा का यह साफ खण्डन है? स्तालिन की भर्त्सना करने के लिए विवादित लेख के लेखक ये 'सिद्धांतकार' खुले में आने से पहले बेहतर होगा कि स्तालिन के बारे में अपने अध्ययन को सुधार लें और उन्नत कर लें।

आइए, अब समाजवाद के बुनियादी आर्थिक नियम को लिया जाय। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के ताजातरीन कार्यक्रम के निरूपणानुसार समाजवाद का बुनियादी आर्थिक नियम है ''समाजवाद का लक्ष्य।'' हम समाजवाद के बुनियादी आर्थिक नियम के इस निरूपण की तारीफ नहीं कर सकते, इसलिए नहीं कि यह सैद्धांतिक तौर पर अस्वीकार्य है, बल्कि इसलिए

कि यह अति अस्पष्ट है। अगर समाजवाद के बुनियादी आर्थिक नियम को ''समाजवाद के लक्ष्य'' के तौर पर निरूपित किया जाता है तो पूंजीवाद के बुनियादी आर्थिक नियम को भी इसी तरह "पूंजीवाद के लक्ष्य" के तौर पर निरूपित किया जा सकता है। लेकिन इसकी अस्पष्टता की वजह से किसी को भी ऐसे निरूपण का स्वागत नहीं करना चाहिए। यह भूलना नहीं चाहिए कि बहुत से युवा कम्युनिस्ट और साधारण लोग हैं जिनकी वैचारिक चेतना का अभी तक इतना पर्याप्त स्तर नहीं है कि "सामाजवाद का लक्ष्य" अभिव्यक्ति का आशय वे पूरी तरह समझ सकें। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) का यह ताजातरीन कार्यक्रम उनके लिए भी अवश्य ही मार्गदर्शक पुस्तिका के तौर पर काम करेगा। इसलिए संक्षिप्तता की कीमत पर भी एक स्पष्ट ढंग से समाजवाद के बुनियादी आर्थिक नियम को व्यक्त करना वांछनीय है। इसके अलावा, "समाजवाद का लक्ष्य" वर्ग विहीन समाज कायम करना है जो एकमात्र समाजवादी अर्थव्यवस्था के सवाल के बारे में ही नहीं है। यह इस बारे में भी है कि पण्य–वस्तु या माल परिचलन का उन्मूलन कैसे किया जाये, व्यक्तिगत सम्पत्ति और सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति में कैसे रूपान्तरित किया जाये, आर्थिक क्रियाकलापों के क्षेत्र से मूल्य के सिद्धान्त के उन्मूलन की प्रक्रिया को तेज करने के लिए मुद्रा–अर्थनीति का उन्मूलन कैसे किया जाये और अन्ततः समाज में बुनियादी सांस्कृतिक और नैतिक परिवर्तन कैसे लाया जाये ताकि "हरेक से उसकी क्षमतानुसार और हरेक को उसकी आवश्यकतानुसार" के सिद्धान्त को लागू किया जा सके और इससे उत्पादन और वितरण के संबंध में मानव–मानव के बीच द्वन्द्व का उन्मूलन किया जा सके।

यह सच है कि ताजातरीन पार्टी कार्यक्रम ने समाजवाद के लक्ष्य को सूत्रबद्ध किया है। कार्यक्रम ऐलान करता है कि "समाजवाद का लक्ष्य है सामाजिक उत्पादन के सतत विस्तार और उत्कर्ष के जरिये लोगों की बढ़ती भौतिक व सांस्कृतिक जरूरतों की सदा भरपूर पूर्ति करना"। *'बुनियादी आर्थिक नियम'* लेख के लेखकों ने इस सूत्र को "समाजवादी उत्पादन के वस्तुगत लक्ष्य और उसको हासिल करने के साधनों की समस्या की रचनात्मक सविस्तार व्याख्या में आगे की ओर एक कदम" बताकर इसकी जय–जयकार की है और इसका सारा श्रेय कॉमरेड ख्रुश्चेव और उनके नेतृत्व में सीपीएसयू की 22वीं कांग्रेस को दिया है। इसमें सन्देह नहीं कि यह समाजवाद की आर्थिक समस्याओं की रचनात्मक सविस्तार व्याख्या में आगे की ओर कदम

है लेकिन ये लेखक थोड़ी ज्यादा खरी–खरी कहते और कम अहंकार रखते तो इस रचनात्मक सविस्तार व्याख्या के लिए ख्रुश्चेव को नहीं बल्कि स्तालिन को श्रेय देते जिनकी भाषा तक को पुनः प्रस्तुत किया गया है लेकिन बगैर उनका कोई हवाला दिये। "...सम्पूर्ण समाज की लगातार बढ़ती भौतिक और सांस्कृतिक जरूरतों की अधिकतम पूर्ति करना ही समाजवादी उत्पादन का लक्ष्य है; उन्नत तकनीकी के आधार पर लगातार समाजवादी उत्पादन को विस्तार व उत्कर्ष प्रदान करना ही इस लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है"–स्तालिन ने अपनी कृति 'सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं' पृष्ठ 86 में ऐसे कहा था। समाजवादी उत्पादन के लक्ष्य और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन के बारे में स्तालिन के इस निरूपण की सीपीएसयू के ताजातरीन कार्यक्रम में प्रस्तुत किये गये निरूपण से कृपया तुलना करके देखें और ईमानदारी से बतायें कि किसको श्रेय जायेगा–ख्रुश्चेव को या स्तालिन को। इन लेखकों ने बुनियादी आर्थिक नियम की अवधारणा लेनिन की नहीं, बल्कि स्तालिन की मान लेने के लिए एल.ए. लिओन्तीव का मजाक उड़ाया है। समाजवादी उत्पादन के वस्तुगत लक्ष्य और इसे प्राप्त करने के लिए साधन की समस्या की सविस्तार व्याख्या को स्तालिन की नहीं बल्कि ख्रुश्चेव की मान लेने के लिए क्या उन्हें अपना खुद का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए? जो एक व्यक्ति के मामले में प्रयोज्य है वही अनुरूप परिस्थितियों में दूसरे व्यक्ति के मामले में भी प्रयोज्य है। हम इन कॉमरेडों की आलोचना–आत्मालोचना में इस कम्युनिस्ट मनोभाव की कमी पाते हैं। सिर्फ यही बात नहीं है। स्तालिन की बातों की बगैर उनका कोई हवाला दिये चोरी से नकल करने के अपने अति उत्साह में *'बुनियादी आर्थिक नियम'* के लेखकों ने स्तालिन द्वारा चर्चित "समाजवादी उत्पादन के लक्ष्य" के बदले में "समाजवाद का लक्ष्य" रखकर गम्भीर गलती की है, क्योंकि इन दोनों बातों को कभी एक समान, नहीं माना जा सकता। समाजवादी उत्पादन के लक्ष्य की तुलना में समाजवाद का लक्ष्य सामाजिक–राजनैतिक और आर्थिक सवालों के बहुत ज्यादा व्यापक और विस्तृत क्षेत्र को समाहित करता है। शायद यह सभी नकलचियों की आम नियति है।

सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति तक उन्नत करना

अगला बिन्दु जिस पर चर्चा की जानी चाहिए, वह सामूहिक फार्म,

माल उत्पादन, सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति और सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति के स्तर तक उन्नत करने के सवाल से सरोकार रखता है। इस तथ्य से कोई इनकार नहीं है कि सोवियत संघ में वर्तमान में समाजवादी उत्पादन के दो बुनियादी रूप हैं–सरकारी या सार्वजनिक मालिकाने में उत्पादन और सामूहिक फार्म उत्पादन जिसे सार्वजनिक मालिकाना नहीं कहा जा सकता। सरकारी क्षेत्र में उत्पादन के साधन और उत्पादन के उत्पाद दोनों ही सार्वजनिक सम्पत्ति हैं, जबकि सामूहिक फार्मों के मामले में उत्पादन के बुनियादी साधन जैसे कि मशीनें (छोटे-मोटे औजार नहीं), जमीन आदि राज्य की हैं और उत्पादन की उपज यानी पैदावार विभिन्न सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि एक साम्यवादी समाज में सम्पत्ति के दो रूप–सार्वजनिक सम्पत्ति और सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति, नहीं हो सकते; वहां तो केवल एक ही तरह की सम्पत्ति, यानी सार्वजनिक सम्पत्ति ही होगी। इसलिए साम्यवादी समाज अर्थात वर्ग विहीन समाज में कम-से-कम इस शब्दावली के आर्थिक मायने में-साम्यवादी निर्माण के लिए सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति के स्तर तक उन्नत करने का सवाल कदापि नहीं उठता क्योंकि उस अवस्था में सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति जैसी कोई सम्पत्ति अस्तित्व में नहीं रह सकती। यह कहना भी अनावश्यक है कि सम्पत्ति के रूपों को मनमर्जी से नहीं बदला जा सकता; वे आर्थिक नियमों के अनुरूप पैदा होते हैं और विकसित होते हैं।

सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति के स्तर तक कैसे उन्नत किया जाये–इस सवाल पर स्तालिन के समय में विचार-विमर्श हुआ था, जब समाजवादी अर्थव्यवस्था को धीरे-धीरे साम्यवादी अर्थव्यवस्था में रूपान्तरित करने के सवाल से सीपीएसयू रूबरू हुई थी और राजनैतिक अर्थशास्त्र पर एक पाठ्य पुस्तक प्रकाशित करने का फैसला लिया गया था। तब कुछ कॉमरेडों ने सुझाव दिया था कि यह करने का सबसे बढ़िया तरीका है सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण करके इसे सार्वजनिक सम्पत्ति घोषित कर दिया जाये। स्तालिन और सीपीएसयू की केन्द्रीय कमेटी दो आधारों पर इस पर सहमत नहीं हो पायी थी। स्तालिन ने कहा था: "सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति समाजवादी सम्पत्ति है। इसके साथ हम पूंजीवादी सम्पत्ति की तरह का बर्ताव नहीं कर सकते। सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति सार्वजनिक सम्पति नहीं है–इस तथ्य से इसका यह तो अर्थ नहीं है

कि यह समाजवादी सम्पत्ति नहीं है।"–यही पहला कारण है। दूसरा कारण यह है कि चूंकि लक्ष्य है विश्व साम्यवादी समाज तक पहुंचना, जब राजसत्ता का लोप हो चुका होगा और चूंकि समाजवादी अर्थव्यवस्था की प्रणाली में सामूहिक फार्म उस उद्देश्य से मेल खाते हैं। इसलिए सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति के स्तर तक उन्नत करने का सबसे बढ़िया तरीका उसका राष्ट्रीयकरण करना नहीं है–"...जब तक राजसत्ता है, तब तक राजकीय सम्पत्ति में रूपान्तरण ही राष्ट्रीयकरण का स्वाभाविक प्रारंभिक तरीका है। लेकिन राजसत्ता तो हमेशा कायम नहीं रहेगी। दुनिया के अधिकांश देशों में समाजवाद के कार्य-क्षेत्र का विस्तार हो जाने के साथ ही राजसत्ता विलुप्त जो जायेगी और तब व्यक्तियों तथा जन-समूहों की सम्पत्ति को राजकीय सम्पत्ति में बदलने का कोई अर्थ ही नहीं रह जायेगा। राज्य का उत्तराधिकारी राज्य नहीं होगा बल्कि एक केन्द्रीय निदेशक निकाय के रूप में खुद समाज होगा।" (सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं, पृष्ठ 96, अंग्रेजी)। अगर स्तालिन ने यह सोचा होता कि "सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति अब कार्यकारी नहीं" और यह कि "साम्यवाद की ओर प्रगति को कुछ हद तक रोकने वाला एक ब्रेक है" 'जैसाकि *'बुनियादी आर्थिक नियम'* के लेखकों ने निष्कर्ष निकाला है तो स्तालिन ने सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण करने और इसे सार्वजनिक सम्पत्ति घोषित करने के सुझाव पर अमल कर लिया होता।

अब, इस संबंध में *"विश्व के अधिकांश देशों में समाजवाद के कार्य क्षेत्र का विस्तार हो जाने के साथ ही* (जोर हमारा) राजसत्ता विलुप्त हो जायेगी..." स्तालिन की इस खास प्रस्थापना के बारे में हम अपना मतभेद दर्ज करना चाहेंगे। हमारा मत है कि यह त्रुटिपूर्ण है चूंकि हमें पूरी तरह यकीन है कि विश्व के अधिकांश देशों में नहीं बल्कि जब तक *समूचे विश्व में* समाजवाद की कार्यप्रणाली का विस्तार नहीं हो जाता तब तक राजसत्ता नहीं हो सकती।

स्तालिन के शब्दों को सन्दर्भ से काटकर कुछ शब्द यहां से कुछ शब्द वहां से उद्धृत करने और आकस्मिक व गलत निष्कर्षों पर पहुंचने के बजाय इन लेखकों को स्तालिन के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करनी चाहिए थी। आइए उत्पादन की शक्तियों पर *ब्रेक* के बारे में स्तालिन ने क्या कहा था, उसकी जांच-परख करें और यह काम करने का ईमानदारीपूर्ण तरीका यह है कि इस पर उनके दृष्टिकोण को पेश करें। "जब मार्क्सवादी लोग उत्पादन के

संबंधों की बाधा डालने वाली भूमिका की बात करते हैं तो उसका अर्थ उत्पादन के तमाम संबंधों से नहीं होता बल्कि उन पुराने उत्पादन के संबंधों से होता है जो उत्पादन की शक्तियों के विकास से अब मेल नहीं खा रहे हैं और फलस्वरूप उनके विकास को धीमा करते हैं। लेकिन जैसाकि हम जानते हैं, पुरानों के साथ-साथ उत्पादन के नए संबंध भी होते हैं जो पुरानों का स्थान ले लेते हैं। क्या यह कहा जा सकता है कि उत्पादन के नए संबंधों की भूमिका उत्पादन की शक्तियों को रोकने वाली *ब्रेक* होती है? नहीं, वह ऐसी नहीं हो सकती। इसके विपरीत, उत्पादन के नए संबंध ऐसी *प्रमुख* और निर्णायक शक्तियां हैं जो उत्पादन की शक्तियों के भविष्य के अधिक ही नहीं, बल्कि तीव्र विकास को निर्धारित करती हैं। इनके बिना उत्पादन की शक्तियां गतिरुद्ध हो जायेंगीं, जैसाकि आज पूंजीवादी देशों में हो रहा है। ...निश्चित ही उत्पादन के नए संबंध हमेशा नये नहीं बने रहते। वे पुराने पड़ने लगते हैं और उत्पादन की शक्तियों के और अधिक विकास के विरोध में चले जाते हैं वे उत्पादन शक्तियों के *प्रधान प्रेरणा स्रोत* की भूमिका खोने लगते हैं और उन पर एक *ब्रेक* का काम करने लगते हैं। उस बिन्दु पर पुराने पड़ गये इन उत्पादन संबंधों की जगह ऐसे नए उत्पादन संबंध सामने आ जाते हैं जो उत्पादन की शक्तियों के आगे के विकास के लिए *प्रधान प्रेरणा-स्रोत* बन जाते हैं। उत्पादन के संबंधों की भूमिका में उत्पादन की शक्तियों पर *ब्रेक* से उनके विकास के *प्रधान प्रेरणा-स्रोत* बनने और फिर *प्रधान प्रेरणा-स्रोत* से उन पर ब्रेक बनने का यह जो विचित्र परिवर्तन होता है, यही मार्क्सवादी भौतिकवादी द्वन्द्वात्मक विज्ञान का एक अन्यतम मुख्य तत्व है।" (*वही*, पृष्ठ 68-70, अंग्रेजी) स्तालिन के इस द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विश्लेषण का कोई कम्युनिस्ट विरोध नहीं कर सकता। इसी आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला था : "यह सही है कि उत्पादन के हमारे वर्तमान संबंध उत्पादन की शक्तियों के विकास की पूर्ण संगति में है और उन्हें कई गुना तेज कदम उठाने में मदद कर रहे हैं, लेकिन इस बात को देखकर खुश हुए रहना और यह समझना ठीक नहीं है कि अब हमारे उत्पादन के संबंध और उत्पादन की शक्तियों के बीच कोई अंतर्विरोध नहीं है। ये अंतर्विरोध हैं और रहेंगे क्योंकि उत्पादन के संबंध उत्पादन की शक्तियों के विकास से पीछे रहते हैं और रहेंगे। निदेशक निकायों की सही नीतियों की वजह से ये अंतर्विरोध शत्रुतापूर्ण नहीं हो पाते और इन मामलों का उत्पादन के संबंधों और समाज की उत्पादन की शक्तियों के बीच टकराव का रूप धारण करने का कोई अवसर नहीं है...

इसलिए हमारे निदेशक निकायों का कार्य है कि वे तत्परता से उभरते प्रारम्भिक अंतर्विरोधों को देखें और उन्हें सुलझाने के लिए उत्पादन के संबंधों को उत्पादन की शक्तियों के विकास के अनुरूप ढालने के लिए समयोचित कदम उठायें। *सर्वोपरि, यह ग्रुप या सामूहिक फार्म सम्पत्ति और पण्य-वस्तु परिचलन जैसे आर्थिक कारकों से संबद्ध है। हां, यह सच है कि वर्तमान में हम इन कारकों को समाजवादी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सफलतापूर्वक इस्तेमाल कर रहे हैं और वे हमारे समाज के लिए निर्विवाद रूप से बेहद उपयोगी हैं। इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि निकट भविष्य में भी वे उपयोगी रहेंगे।* (जोर हमारा) लेकिन साथ ही इस बात को न देख पाना एक अक्षम्य अपराध ही होगा कि ये कारक हमारी उत्पादन की शक्तियों के तीव्र विकास में बाधा बनने लगे हैं क्योंकि वे सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, विशेषकर कृषि के लिए सहकारी योजना के पूर्ण विस्तार में रुकावट डालते हैं" (*वही*, पृ. 75-76, अंग्रेजी) क्या इससे यह मतलब निकलता है कि स्तालिन ने यह समझा था कि सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति पहले ही अकार्यकारी हो गई थी या फिर क्या इससे यह साबित होता है कि स्तालिन ने सोवियत समाज के लिए सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति की उपयोगिता को न केवल वर्तमान के लिए बल्कि आने वाले समय के लिए भी पूरी मान्यता दे दी थी? क्या उपरोक्त लेख के लेखक स्तालिन की इस टिप्पणी का खण्डन कर सकते हैं कि सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति और माल परिचलन सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था (कृषि) की सरकारी योजना के पूर्ण विस्तार में रुकावट डालते हैं? क्या *समाज* के उत्पादन संबंधों और उत्पादन शक्तियों के बीच अंतर्विरोध उस हद तक मौजूद नहीं हैं?

माल परिचलन पर चर्चा करने में भी इन लेखकों द्वारा इसी तरह का भ्रम पैदा किया गया है। वे जोर देकर कहते हैं कि "स्तालिन ने व्यावहारिक काम में बाधा डालने वाली पूर्णतः दोषपूर्ण यह प्रस्थापना प्रस्तुत की कि साम्यवादी निर्माण की प्रक्रिया में माल और ये मुद्रा-संबंध काम के नहीं रहे हैं और साम्यवाद की ओर हमारी प्रगति को धीमा करते हैं, इसलिए माल परिचलन को संकुचित कर देना चाहिए और इसके विपरीत, वस्तु-विनिमय (barter) के क्षेत्र को विस्तृत कर देना चाहिए ...हमारी पार्टी ने अपने कार्यक्रम में स्पष्ट रूप से दर्शाया है कि साम्यवादी समाज निर्मित करने के कार्य में माल और मुद्रा संबंधों का पूर्णरूपेण इस्तेमाल करना चाहिए।"

युक्तिसंगत रूप से यह मान लेना चाहिए कि यह ताजातरीन पार्टी कार्यक्रम स्तालिन की प्रस्थापना से तनिक भी आगे नहीं गया है। ये स्तालिन ही थे, जिन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि माल उत्पादन और माल परिचलन समाजवादी अर्थव्यवस्था की प्रणाली में अनिवार्य और अत्यधिक उपयोगी तत्व रहेंगे और यह कि समाजवादी उत्पादन के विकास और सुदृढ़ीकरण के लिए माल परिचलन की प्रणाली में अन्तर्निहित हर संभावना, क्षमता का फायदा उठाना नितांत आवश्यक है। स्तालिन का निम्नलिखित विश्लेषण अन्तिम और निर्णायक रूप से इसे सिद्ध कर देगा। "वर्तमान समय में ये सामूहिक फार्म शहरों से पण्य के संबंध–क्रय–विक्रय के जरिये विनिमय के संबंध के अलावा और किसी दूसरे आर्थिक संबंध को मान्यता नहीं देंगे। इस वजह से माल उत्पादन और व्यापार आज भी हमारे लिए उतने ही जरूरी हैं जितने आज से तीस वर्ष पूर्व थे, यानी जब लेनिन ने व्यापार के पूर्ण विकास की आवश्यकता की बात कही थी। यकीनन, जब राजकीय क्षेत्र और सामूहिक फार्म क्षेत्र के दो मूल उत्पादन क्षेत्रों की जगह देश में उत्पादित उपभोक्ता सामानों के वितरण का अधिकारी केवल एक ही सर्व–समावेशी उत्पादन क्षेत्र रह जायेगा तो अपनी "मुद्रा अर्थनीति" सहित माल परिचलन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एक अनावश्यक तत्व बन जाने के कारण विलुप्त हो जायेगा। लेकिन जब तक 'ऐसा नहीं हो जाता है और *जब तक दो बुनियादी उत्पादन क्षेत्र बरकरार रहते हैं तब तक हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एक आवश्यक और उपयोगी तत्व के रूप में माल–उत्पादन और माल परिचलन भी जारी रहेगा।...* फलस्वरूप, *हमारा माल उत्पादन सामान्य प्रकार का नहीं, बल्कि विशेष प्रकार का है... अपनी मुद्रा अर्थ–नीति के साथ वह समाजवादी उत्पादन को ही विकसित और सुदृढ़ करने में मदद करने के लिए है।"* (*सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं*, पृ. 20–21, अंग्रेजी संस्करण, जोर हमारा)

निस्सन्देह, 'समाजवादी उत्पादन को विकसित और सृदृढ़ करने' का अर्थ है साम्यवाद की ओर आगे बढ़ना। इस तरह, स्तालिन के कथनानुसार, साम्यवाद की ओर आगे बढ़ने की प्रक्रिया में माल उत्पादन और माल परिचलन *एक खास अवधि के लिए नितांत आवश्यक और उपयोगी तत्व के रूप में जारी रहेगा।* जहाँ उन्होंने माल और मुद्रा–संबंधों की उपयोगिता का, सम्पूर्ण में, संज्ञान लिया वहां साथ ही उन्होंने उनकी सीमाबद्धताओं को भी स्पष्ट रूप से दर्शाया। *'बुनियादी आर्थिक नियम'* के लेखकों के साथ दिक्कत यह है कि वे इन सीमाबद्धताओं को देख नहीं पाते हैं। इसके अलावा जहां 'साम्यवाद की ओर संक्रमण' अभिव्यक्ति से स्तालिन का अभिप्राय वास्तविक संक्रमण है, वहीं इन लेखकों का उद्देश्य केवल घोषणामूलक है।

सीपीएसयू की 22वीं कांग्रेस से बहुत पहले ही स्तालिन ने यह भांप लिया था कि सोवियत अर्थव्यवस्था विकास की उस स्थिति पर पहुंच चुकी थी जब अर्थशास्त्रीय शब्दावली के सबसे सटीक अर्थों में समाजवाद से साम्यवाद में संक्रमण के लिए कार्यक्रम ग्रहण करना बिल्कुल सम्भव था। लेकिन संक्रमण को घोषणामूलक नहीं बल्कि वास्तविक बनाने के लिए उन्होंने महसूस किया कि ठोस कदम उठाने का समय आ गया है ताकि सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति धीरे–धीरे खुद को सार्वजनिक सम्पत्ति में रूपान्तरित करती जाये और माल परिचलन व मुद्रा अर्थनीति अपने अधिकतम इस्तेमाल की प्रक्रिया में समाज के फायदे के लिए धीरे–धीरे अपनी उपयोगिता खो दे और अंततः सामाजिक जीवन में अनावश्यक तत्व हो कर विलुप्त हो जाये।

ख्रुश्चेव ने सीपीएसयू की 21वीं असाधारण कांग्रेस की अपनी रिपोर्ट में "सामूहिक फार्म सम्पत्ति और सार्वजनिक सम्पत्ति दोनों के बीच की विभाजन रेखा को धीरे–धीरे मिटाते हुए सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सार्वजनिक संपत्ति के अत्यन्त सन्निकट लाने" के चार उपाय सुझाये थे। ये उपाय थे–(1) सामूहिक फार्मों की गैर वितरणीय परिसम्पत्तियों की अबाध वृद्धि; (2) कृषि की अधिकाधिक शाखाओं को शामिल करने के लिए सामूहिक फार्म उत्पादन का परिवर्द्धन; (3) अन्तर–फार्म उत्पादन के सम्बन्ध सूत्रों और सहयोग के विविध रूप; (4) कृषि का बिजलीकरण, यांत्रिकीकरण, स्वचालितीकरण। ये उपाय सोवियत कृषि के सुधार के लिए स्तालिन द्वारा प्रस्तुत लाइन से बिल्कुल मेल खाते हैं। लेकिन इन उपायों के बावजूद भी और इनके बिना भी सामूहिक फार्मों की अतिरिक्त पैदावार बाजार में जाती रहेगी और माल परिचलन की प्रणाली में ही समाहित रहेगी। परन्तु समाजवाद से साम्यवाद की दिशा में वास्तविक संक्रमण के लिए सामूहिक फार्मों की अतिरिक्त पैदावार, जो यहां तक कि ख्रुश्चेव द्वारा सुझाये गये उपायों के लागू होने के बाद भी एक माल ही बनी रहती है, माल परिचलन प्रणाली से बाहर निकाल देना होगा। लेकिन यह कैसे किया जायेगा? इस सवाल का जवाब देने के लिए न तो ख्रुश्चेव और न ही

सोवियत संघ के अर्थशास्त्र के इन विशेषज्ञों के पास पेश करने को कुछ है जो स्तालिन को बदनाम कर रहे हैं। स्तालिन ने सुझाव दिया था कि सामूहिक फार्मों की पैदावार को माल परिचलन की प्रणाली से बाहर निकाल कर और इसे सामूहिक फार्मों के फायदे के लिए राजकीय उद्योगों और सामूहिक फार्मों के बीच उत्पाद-विनिमय (Product exchange) की प्रणाली में शामिल करके ऐसा किया जा सकेगा। स्तालिन की राय में सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति के स्तर पर उठाने की प्रक्रिया को भी यह तेज करेगा।

स्तालिन की इस प्रस्थापना को *'बुनियादी आर्थिक नियम'* निबंध के लेखक अमान्य और असंगत ठहराते हैं। वे दलील देते हैं: "इस भ्रामक दावे में दो घोर सैद्धान्तिक गलतियाँ अन्तर्निहित हैं। पहली, स्तालिन ने मान लिया कि सामूहिक फार्म की पैदावार ही फार्म की सम्पत्ति की एकमात्र चीज है। ...दूसरी, स्तालिन ने समाजवादी उत्पादन-संबंधों के साम्यवादी उत्पादन-संबंधों में रूपान्तरण को सामाजिक उत्पादन की वृद्धि के अधीनस्थ नहीं बल्कि, शहर और देहात के बीच माल परिचालन को या तो बचाने या उसका उन्मूलन करने के लिए विनिमय की मात्रा की वृद्धि के अधीनस्थ कर दिया।" इस विचारणीय सवाल पर स्तालिन के विश्लेषण की जांच-पड़ताल दिखा देगी कि इन लेखकों की दलील तथ्यों की घोर गलतबयानी का पुलिन्दा है। स्तालिन ने कहा था : "तब, सामूहिक फार्मों के मालिकाने में क्या है? सामूहिक फार्मों के पास वह कौन सी सम्पत्ति है जिसे वे अपनी इच्छानुसार पूरी स्वतंत्रता से बेच सकते हैं? सामूहिक फार्मों के पास यह सम्पत्ति उसकी पैदावार है-खाद्यान्न, मांस, मक्खन, सब्जियां, कपास, चीनी, चुकन्दर, पटसन आदि जिन्हें सामूहिक फार्म पैदा करते हैं। इसमें सामूहिक किसानों के घरेलू प्लाटों पर बने मकान और निजी पशुधन नहीं आते।" (वही, पृ. 103, अंग्रेजी) क्या इस वक्तव्य में "मांस मुहैया कराने वाले, दुधारू और भारवाही पशु" नहीं आते हैं जैसा कि अर्थशास्त्र के इन विशेषज्ञों द्वारा आरोप लगाया गया है? क्या यह इन लेखकों के वक्तव्य की अशुद्धि को साबित नहीं कर देता है कि स्तालिन ने सामूहिक फार्म की पैदावार को ही सामूहिक फार्म की सम्पत्ति की *एकमात्र* चीज माना था? इन गलतबयानियों के अलावा, वे चर्चा की विषय वस्तु को भी समझने में विफल रहे हैं। स्तालिन *सामूहिक फार्म की सामान्य सम्पत्ति की नहीं बल्कि इसकी सम्पत्ति की केवल उन्हीं चीजों की चर्चा कर रहे थे जो बाजार में जाती हैं और इसलिए माल परिचलन की प्रणाली में शामिल हैं।* इसलिए उचित ही, उन्होंने सामूहिक फार्म की सम्पत्ति की कुछ चीजों जैसे कि सिंचाई के लिए लगाये गये यंत्र, सांस्कृतिक व जनोपयोगी सेवाएं, लघु सहायक संयंत्र आदि का जिक्र नहीं किया।

इन लेखकों की दलील का दूसरा बिन्दु भी समान रूप से गलत है। इसमें यह दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है कि समाजवाद से साम्यवाद में संक्रमण के लिए स्तालिन ने सामाजिक उत्पादन के क्षेत्र के बदले विनिमय के क्षेत्र पर जोर दे दिया; इसके विपरीत, यह दिखाने के लिए बहुत कुछ है कि स्तालिन ने सामाजिक उत्पादन, विनिमय और लोगों के सांस्कृतिक विकास को उनकी प्राथमिकता के क्रम में महत्त्व दिया था। मार्क्स ने कहा था, "उत्पादन में मनुष्य केवल प्रकृति पर ही नहीं बल्कि एक दूसरे पर भी क्रिया करते हैं। एक निश्चित तरीके से सहयोग और अपने कार्यकलापों का परस्पर आदान-प्रदान करके ही वे उत्पादन करते हैं। उत्पादन करने के लिए वे एक दूसरे से निश्चित सम्पर्क व सम्बन्ध बनाते हैं और इन्हीं सामाजिक सम्पर्कों व सम्बंधों के अन्दर ही प्रकृति पर उनकी क्रिया होती है, उत्पादन होता है", (*मार्क्स-एंगेल्स,* खंड 5, पृ. 429, अंग्रेजी)। इस तरह, सामाजिक उत्पादन के अन्तर्गत दो पक्ष आते हैं जो हालांकि अभिन्न रूप से संबंधित होते हैं और एक अखण्ड सत्ता बनाते हैं, दो भिन्न संबंधों को प्रतिबिम्बित करते हैं : (1) प्रकृति के साथ मनुष्यों के सम्बंध (उत्पादन-शक्तियां) और (2) उत्पादन की प्रक्रिया में एक दूसरे के साथ मनुष्यों के संबंध (उत्पादन–संबंध)। एक के महत्त्व को ज्यादा और दूसरे के महत्त्व को कम करके आंकना मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति गम्भीर अपराध करना हो जाता है। सोवियत संघ के वर्तमान नेता साम्यवाद की ओर प्रगति की प्रक्रिया में पहले नम्बर वाले संबंध की भूमिका को ज्यादा महत्त्व दे रहे हैं और दूसरे नम्बर वाले संबंध की भूमिका को कम महत्व दे रहे हैं। इस बारे में स्तालिन का नजरिया क्या है? उन्होंने कहा था–"साम्यवाद की ओर घोषणात्मक नहीं, बल्कि वास्तविक संक्रमण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए हमें कम-से-कम तीन प्रमुख प्राथमिक शर्तों को पूरा करना होगा। *सबसे पहली,* उत्पादन की शक्तियों का कपोल-कल्पित, 'युक्तिसंगत संगठन' नहीं बल्कि तमाम सामाजिक उत्पादन के निरंतर विस्तार के साथ-साथ उत्पादन के साधनों के उत्पादन के सापेक्षतः उच्च दर से विस्तार को पक्के तौर पर सुनिश्चित करना जरूरी है।....

"*दूसरी*, सामूहिक फार्मों के हित में और इसलिए सारे समाज के हित में किये जा रहे धीरे-धीरे संक्रमण के द्वारा सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति को सार्वजनिक सम्पत्ति के स्तर तक उन्नत करना जरूरी है, साथ-ही-साथ, माल परिचलन को धीरे-धीरे संक्रमण के द्वारा उत्पाद-विनिमय की प्रणाली में बदल देना जरूरी है जिसके तहत केन्द्रीय सरकार या अन्य कोई सामाजिक-आर्थिक केन्द्र, समाज के हितों में सामाजिक उत्पादन के सम्पूर्ण उत्पाद को नियंत्रित कर सके। ...*तीसरी,* समाज का ऐसा सांस्कृतिक विकास सुनिश्चित करना जरूरी है जो समाज के तमाम सदस्यों के लिए उनकी शारीरिक और मानसिक योग्यताओं व क्षमताओं के सर्वांगीण विकास के पूरे अवसर सुनिश्चित करेगा ताकि समाज के सदस्य सामाजिक विकास के सक्रिय कार्यकर्ता बनने में सक्षम होने के लिए पर्याप्त व उचित शिक्षा प्राप्त करने की स्थिति में हो सकें और मौजूदा श्रम विभाजन की वजह से अपने सारे जीवन भर किसी एक ही पेशे से न बंधे रह कर स्वतंत्रतापूर्वक अपना पेशा चुनने की स्थिति में आ सकें।" *(सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं, पृ. 74-76, अंग्रेजी)* इसमें जो सामाजिक उत्पादन के महत्त्व को गौण मानते हैं (स्तालिन ने तो सामाजिक उत्पादन को पहला स्थान दिया था) वे स्तालिन के प्रति नापसंदगी की एक बीमार मानसिकता से ग्रस्त हैं। स्तालिन ने न केवल समाजवाद से साम्यवाद में वास्तविक संक्रमण के लिए इन शर्तों को सूत्रबद्ध किया था और इन सबके सापेक्ष महत्त्व का स्थान नियत किया था बल्कि इन शर्तों को अर्जित करने के लिए ठोस उपाय भी सुझाये थे। कम-से-कम हम वर्तमान समय में जो चीज देख पाते हैं वह यह है कि सीपीएसयू के वर्तमान नेता मुख्यत: उन्हीं उपायों को कार्यान्वित कर रहे हैं और साथ ही स्तालिन को सबसे बुरे रूप में चित्रित कर रहे हैं। हमारे ख्याल से यह कम्युनिस्ट आचरण विधि का उल्लंघन है। सटीक तौर पर कहें तो उन्होंने स्तालिन के इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया कि सामूहिक फार्मों की अतिरिक्त पैदावार, जो माल परिचलन की प्रणाली में शामिल है, को धीरे-धीरे वस्तु-विनिमय की प्रणाली के तहत लाया जा सकता है। शायद सामूहिक फार्मों को उत्पादन के लिए इन्सेटिव यानी प्रोत्साहन-प्रलोभन देने के ख्याल से उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया है जिसे हम एक बहुत ही खतरनाक रुझान समझते हैं। साम्यवाद में संक्रमण की प्रक्रिया में माल परिचलन को सीमित करने के बजाय इसके क्षेत्र को विस्तृत करने हेतु सीपीएसयू के वर्तमान नेताओं द्वारा उठाये गये कदमों के सहवर्ती परिणामों को अभी हमें देखना है।

लोगों की क्रय शक्ति

सीपीएसयू की 16वीं कांग्रेस में केन्द्रीय कमेटी की राजनैतिक रिपोर्ट में स्तालिन ने कहा था : "यही वजह है कि यहां, सोवियत संघ में, जन उपभोग (क्रय शक्ति) की वृद्धि उत्पादन की वृद्धि से लगातार ज्यादा होती जाती है और इसे आगे धकेलती जाती है जबकि वहां, पूंजीवादी देशों में, इसके विपरीत, जन उपभोग (क्रय शक्ति) की वृद्धि उत्पादन की वृद्धि से कभी कदम नहीं मिला पाती है बल्कि इससे लगातार पिछड़ती जाती है और इस तरह उद्योगों को समय-समय पर अनिवार्य रूप से संकटों में डुबोती है।" *(संकलित रचनाएं,* खंड 12, पृ. 332, अंग्रेजी)। *बुनियादी आर्थिक नियम* के लेखक कोई कारण बताये बिना दावा करते हैं कि स्तालिन ने "यह हामी भर गलती की कि समाजवादी व्यवस्था में लोगों की क्रय शक्ति सदा वास्तविक उत्पादन की वृद्धि से ज्यादा होती जानी चाहिए।"

साफ जाहिर है कि स्तालिन अपनी उपरोक्त टिप्पणी के द्वारा 16वीं कांग्रेस का ध्यान अर्थव्यवस्था की दो विरोधी व्यवस्थाओं—समाजवादी और पूंजीवादी व्यवस्थाओं के विकास की विशिष्ट बुनियादी लाक्षणिकताओं, इन दोनों व्यवस्थाओं के विकास के पीछे कार्यरत मेकेनिज्म यानी कार्य प्रक्रिया और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की बजाय समाजवादी अर्थव्यवस्था के अधिक फायदे की ओर दिलाना चाहते थे। इसलिए सवाल *'चाहिए'* का नहीं, बल्कि *'है'* का है, सवाल लाक्षणिकता क्या होनी *चाहिए* का नहीं है जैसा कि इन लोगों द्वारा पेश किया गया है बल्कि सवाल उस लाक्षणिकता का है जो वास्तव में *मौजूद* है। *चाहिए* शब्द के इस्तेमाल में यह दोषपूर्ण विचार अन्तर्निहित है कि एक समाजवादी राज्य अपनी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए नये आर्थिक नियमों का सृजन कर सकता है। आर्थिक विकास के नियम चाहे पूंजीवाद के दौर में हों या समाजवाद के दौर में—मनुष्य की इच्छा से स्वतंत्र होते हैं, मनुष्य "इन नियमों की खोज कर सकता है, इन्हें जान सकता है और इन पर भरोसा करके समाज के हित में इन्हें इस्तेमाल कर सकता है; वह इन नियमों के विनाशकारी क्रियाकलापों को दूसरी दिशा दे सकता है और उन दूसरे नियमों को और भी भरपूर अवसर प्रदान कर सकता है जो आगे आने के लिए अपना रास्ता बनाने हेतु जोर मार रहे हैं; लेकिन वह न तो उन्हें मिटा सकता है और न ही नये आर्थिक नियमों का सृजन कर सकता है।" (*सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं*)। तब फिर, इन लेखकों द्वारा इस्तेमाल किये गये "हामी भर के गलती की"

शब्दों का सही-सही अर्थ भी एकदम स्पष्ट नहीं है। इससे क्या उन का आशय यह है कि गलती हामी भरने अर्थात पुष्टि करने में निहित है या क्या उनका आशय यह है कि स्वयं यह निरूपण ही गलत है। अगर उनका आशय पहले वाला है तो इसका यह अर्थ निकलता है कि यह निरूपण उस समय तो बिल्कुल सही माना गया था जब 1930 में यह शुरू में पेश किया गया था, लेकिन नये आर्थिक हालातों के कारण अब यह अपनी उपयोगिता खो चुका है। अगर उनका आशय बाद वाले से है तब तो स्वयं यह निरूपण ही गलत है, समय की कोई बात ही नहीं है। इन लेखकों का चाहे जो भी अभिमत हो, वे गलत हैं।

कॉमरेड एल. गैटोवस्की ने *'वर्ल्ड मार्क्सिस्ट रिव्यू'* (खंड 5, अंक 2, फरवरी 1962) में प्रकाशित लेख *समाजवादी वितरण से साम्यवादी वितरण* में स्तालिन के इस निरूपण का उल्लेख किया है और सीपीएसयू की 22वीं कांग्रेस में ख्रुश्चेव के भाषण के बल पर इसे एक "जड़सूत्र" और "सैद्धान्तिक रूप से बेबुनियाद" करार देकर ठुकरा दिया था। जब ख्रुश्चेव के भाषण को तर्क की मूल लाइन रखने वाले के तौर पर पेश किया गया है तो इसे पूरा का पूरा उद्धृत करना तर्कसंगत है। ख्रुश्चेव ने कहा: "क्रांतिकारी सिद्धान्त के सारतत्व और रचनात्मक भावना का इतना ज्यादा और कोई खण्डन नहीं करती जितनी उन प्रस्थापनाओं के साथ चिपके रहने की कोशिश जिनकी आधारहीनता जीवन की वास्तविकताओं द्वारा साबित हो चुकी है। इसकी मिसाल हमारे आर्थिक साहित्य में लंबे अर्से से प्रचलित यह थीसिस है कि समाजवाद में लोगों की क्रय शक्ति हमेशा उत्पादन की वृद्धि से ज्यादा होनी चाहिए और यह कि यह विशिष्ट लाभ भी है जो कि समाजवाद को पूंजीवाद से ज्यादा प्राप्त है और जो हमारे विकास की चालक शक्तियों में से एक है। यह साफ तौर पर दोषपूर्ण दावा जो उत्पादन और उपभोग के बीच संबंध में मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त का खण्डन करता है, स्तालिन की इस दोषपूर्ण थीसिस की गैर-आलोचनात्मक जड़सूत्रवादी स्वीकृति से उभर कर आया है जिसका निष्कर्ष यह है कि सोवियत संघ में 'जन उपभोग (क्रय शक्ति) की वृद्धि उत्पादन की वृद्धि से लगातार ज्यादा होती जाती है..., इस मत के पैरोकारों को इस बात की कोई चिंता नहीं थी कि वे प्राथमिक और मूलभूत आवश्यकताओं की चीजों की कमी को ही असल में जायज ठहरा रहे हैं और राशन प्रणाली और उसकी मानसिकता को चिरस्थायी बनाये रखने पर तुले हुए हैं। समाजवादी अर्थव्यवस्था

एक योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था होती है। जो-जो चीजें उत्पादित करनी होती हैं हम उनकी मात्रा और किस्म की जब योजना बना रहे होते हैं तब इन चीजों के लिए लोगों की मांग को पूरी तवज्जो दे सकते हैं और देनी भी होगी। लेनिन ने कहा था कि समाजवाद का मायने है 'समाज के सभी सदस्यों के कल्याण और सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक उत्पादन की प्रक्रिया को योजनाबद्ध रूप से संगठित करना।' एकाधिक अवसरों पर उन्होंने लोगों के लिए चीजों की प्रचुरता पैदा करने में सक्षम उत्पादन-विकास की पर्याप्त दर सुनिश्चित करने की जरूरत पर जोर दिया था। हमें लेनिन के इन दिशा-निर्देशनों से ही संचालित होना होगा।" हमने कॉमरेड ख्रुश्चेव* को पूरा का पूरा उद्धृत किया है और चूंकि यह अंधकार दूर करने की बजाय इसे और भी धुंधला बना देता है इसलिए हम उनसे कुछ सवाल पूछते हैं। उत्पादन और उपभोग के बीच संबंध का मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त क्या है? "जन उपभोग (क्रय शक्ति) की वृद्धि उत्पादन की वृद्धि से लगातार ज्यादा होती जाती है"-स्तालिन का यह निरूपण मार्क्सवादी-लेनिनवादी उपरोक्त सिद्धांत का खण्डन कैसे करता है? हालांकि उनकी रिपोर्ट कई लाख शब्दों से पटी हुई है लेकिन खेद के साथ हमें यह कहना पड़ता है कि इसने इन प्रसंगानुकूल सवालों का कोई जवाब नहीं दिया है। इसमें महज जड़सूत्रवादी ढंग से यह दावा किया गया है कि स्तालिन का निरूपण दोषपूर्ण है और यह उत्पादन व उपभोग के बीच संबंध के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त का खण्डन करता है। लेकिन निश्चय ही इस जड़सूत्रवादी दावे में कोई तर्क नहीं है। उन्होंने यूं कहते हुए लेनिन को उद्धृत करने का कष्ट किया है कि समाजवाद का मायने है "समाज के सभी सदस्यों के कल्याण और सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक उत्पादन की प्रक्रिया को योजनाबद्ध रूप से संगठित करना" मानो स्तालिन इस लेनिनवादी निरूपण के खिलाफ हों। यह महज हास्यास्पद है! उन्होंने यह भी हमें याद दिलाया है कि एकाधिक अवसरों पर लेनिन ने "लोगों के लिए चीजों की प्रचुरता पैदा करने के लिए उत्पादन विकास की पर्याप्त दर सुनिश्चित करने की जरूरत पर जोर दिया था।" इसकी सटीकता को कौन चुनौती देता है? कम-से-कम स्तालिन ने तो ऐसी कोई चुनौती नहीं दी। तरस तो इस बात पर आता है कि ख्रुश्चेव ने बहुत सारी बातें कही हैं लेकिन असली बात नहीं कही कि स्तालिन का निरूपण सैद्धान्तिक तौर पर किस तरह गलत है। क्या उनके जैसे उच्च दर्जे के कम्युनिस्ट नेता को

बेसिरपैर की हांकने की बजाय इसे सटीक और ठोस शब्दावली में नहीं कहना चाहिए था? स्तालिन का उपरोक्त निरूपण समाजवादी अर्थव्यवस्था के विकास की एक महत्त्वपूर्ण लाक्षणिकता समाजवादी उत्पादन के लगातार विस्तार व उत्कर्षता के पीछे काम करने वाले मैकेनिज्म का वर्णन करता है ताकि जन कल्याण और सर्वांगीण विकास के लिए चीजों की प्रचुरता को सुनिश्चित किया जा सके। ख्रुश्चेव और इन लेखकों ने समाजवादी अर्थव्यवस्था की अन्यतम बुनियादी लाक्षणिकता को समाजवादी उत्पादन के लक्ष्य के साथ गड्डमड्ड कर डाला है। आर्थिक विकास का यह पहलू योजना के लक्ष्य को संभव व साकार बनाता है लेकिन फिर भी यह स्वयमेव लक्ष्य कतई नहीं है।

ऐसा क्यों है कि जहां पूंजीवादी अर्थव्यवस्था अति-उत्पादन के लाजमी संकट से ग्रस्त है, वहीं समाजवादी अर्थव्यवस्था में ऐसा कोई संकट दिखाई देना तो दूर रहा, यह लोगों के लिए उत्पादित सामानों के बहुतायत में सृजन को सुनिश्चित करने वाले सामाजिक उत्पादन के लगातार विकास और उत्कर्षता के द्वारा साफ फर्क दर्शाती है? क्या यह सामानों की बहुतायत पैदा करने की कम्युनिस्टों की इच्छा और पूंजीपतियों की ओर से ऐसी किसी इच्छा की कमी की वजह से है? किसी मंदबुद्धि के सिवाय और कोई ऐसा नहीं सोच सकता। दो विरोधी अर्थव्यवस्थाओं-पूंजीवादी और समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं में, जैसा भी मामला हो, क्रियाशील और विद्यमान आर्थिक विकास की भिन्न लाक्षणिकताओं वाले आर्थिक नियमों के भिन्न समुच्चयों के कारण ऐसा है। रूस में पूंजीवाद के आर्थिक विकास की चर्चा करते हुए लेनिन ने कहा था: "पूंजीवाद द्वारा सामाजिक उत्पादन की शक्तियों के विकास की एक अन्य लाक्षणिकता यह है कि उत्पादन के साधनों (उत्पादन के उपभोग) की वृद्धि व्यक्तिगत उपभोग की वृद्धि से कहीं ज्यादा तेज गति से होती है।" (*संकलित रचनाएं*, लारेन्स एवं विशर्ट प्रकाशन, खंड-1, पृ. 382, अंग्रेजी)। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन की वृद्धि और जन उपभोग की वृद्धि के बीच विरोधात्मक अंतर्विरोध अति उत्पादन के आवर्ती संकट के रूप में अपने आप को प्रकट करता है। समाजवाद में भी अगर अर्थव्यवस्था की यह लाक्षणिकता विद्यमान होती तो समाजवादी अर्थव्यवस्था में भी अति उत्पादन दिखाई देता। गौरतलब है कि पूंजीवादी अति उत्पादन समाज के सभी सदस्यों की कुल जरूरतों को देखते हुए अति उत्पादन नहीं होता है बल्कि उनकी क्रय शक्ति की दृष्टि से अति उत्पादन होता है।

"हरेक को उसके काम के अनुसार दाम" सिद्धांत द्वारा निर्देशित समाजवाद के अन्तर्गत लोगों की क्रय शक्ति की समस्या अभी भी बनी रहती है, उसकी मुद्रा-अर्थनीति सहित माल उत्पादन, चाहे सीमित क्षेत्र में ही सही, अभी भी चालू रहता है और इसके फलस्वरूप मूल्य का नियम भी अभी भी चालू रहता है। ऐसी स्थिति में जन उपभोग (क्रय शक्ति) की वृद्धि से आगे बढ़ी हुई उत्पादन की वृद्धि अति उत्पादन के खतरे से भरी है जो अपनी बारी में, स्पष्ट तौर पर उत्पादन के निरन्तर विस्तार और उत्कर्षता की प्रक्रिया को ब्रेक लगा देती है। लेकिन हकीकत यह है कि समाजवादी अर्थव्यवस्था, अति उत्पादन के संकट की बात तो दूर रही, किसी अति उत्पादन का सामना नहीं करती है। अतिरिक्त मूल्य पैदा करने के अपने बुनियादी आर्थिक नियम और अधिकतम मुनाफा हस्तगत करने के अपने लक्ष्य वाली पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के विपरीत समाजवादी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य अतिरिक्त मूल्य पैदा करना नहीं बल्कि लोगों की भौतिक और सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए सामाजिक तौर पर जरूरी चीजों को पैदा करना होता है; इसकी लाक्षणिकताएं भी बुनियादी तौर पर अलग होती हैं। पूंजीवाद में जो होता है उसके विपरीत समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादित सामाजिक सम्पदा का एक बहुत बड़ा भाग चूंकि लगातार वेतन-भत्ते आदि से होने वाली आय में तब्दील होता जाता है, इसलिए न्यूनतम वेतन स्तर को लगातार ऊपर उठाता जाता है। इसलिए यह एक परिस्थिति-विशेष के तहत लोगों की क्रय क्षमता और सांस्कृतिक व नैतिक स्तर सहित जीवन स्तर के अविचल, अनवरत एवं सुव्यवथित रूप से ऊपर उठने में मदद करती है जिसे इसलिए लगातार उन्नत किया जाता है कि यह समाजवादी उत्पादन के प्रधान लक्ष्य की पूर्ति में सहायक स्तर तक पहुंच जाये। लोगों की क्रय क्षमता में यह लगातार बढ़ोतरी मांग के स्तर को लगातार ऊपर उठाती जाती है। यही वजह है कि समाजवादी अर्थव्यवस्था में उपभोग के लिए माँग वास्तविक उत्पादन से हमेशा ज्यादा होती जाती है। यह लोगों के लिए सामाजिक उत्पादन के उत्पादों की बहुतायत के गारन्टीशुदा सृजन के लिए योजनाबद्ध मार्गदर्शन के सिद्धान्त के सफल क्रियान्वयन के जरिये समाजवादी उत्पादन के निरन्तर विस्तार और उत्कर्षता के लिए सतत प्रोत्साहन के रूप में काम करती है जिस तरह सर्वहारा के अधिनायकत्व का सिद्धान्त न तो कपोल कल्पना की उपज है और न ही मजदूर वर्ग के अधिनायकत्व वाले शासन को जारी रखने का साधन है,

बल्कि वर्ग संघर्ष के नियम और समाज विकास के अन्य नियमों की स्वीकृति है और समूचे संक्रमण के दौर को वर्ग शासन के उन्मूलन और विश्व साम्यवादी समाज अर्थात वर्ग विहीन समाज की स्थापना की प्रक्रिया को तेज करने का साधन मानता है, उसी तरह यह निरूपण कि समाजवाद में लोगों की क्रय शक्ति की वृद्धि उत्पादन की वृद्धि से ज्यादा होती जाती है, न तो मनगढ़न्त सिद्धान्त है और न ही "प्राथमिक जरूरत की चीजों की कमी को ही जायज ठहराने और राशन प्रणाली व इसकी मानसिकता को ही चिरस्थायी बनाये रखने" की चालबाजी है जैसाकि ख्रुश्चेव शिकायत करते हैं, बल्कि यह समाजवादी अर्थव्यवस्था की इस वस्तुगत लाक्षणिकता की स्वीकृति है जो लाक्षणिकता समाजवाद में लोगों के लिए सामाजिक उत्पादन के उत्पादों की प्रचुरता पैदा करने के लिए समाजवादी उत्पादन के निरन्तर विस्तारीकरण और उत्कर्षीकरण को लाना संभव बनाती है।

पूंजीवादी उत्पादन की मात्रा

स्तालिन अपनी कृति *'सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं'* में इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे ''यह साफ जाहिर है कि विश्व बाजार के विभाजित हो जाने और बड़े-बड़े पूंजीवादी देशों (अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस) द्वारा विश्व के संसाधनों के किये जा रहे शोषण-दोहन के क्षेत्र का संकुचन शुरू हो जाने के बाद पूंजीवाद के विकास का आवर्तन-चक्र-उत्पादन का विस्तार और संकुचन-अवश्य ही जारी रहेगा। हालांकि इन देशों में उत्पादन का विस्तारीकरण और भी संकुचित आधार पर जारी रहेगा क्योंकि उत्पादन की मात्रा घटती जायेगी।'' (पृष्ठ 63, अंग्रेजी)। *'बुनियादी आर्थिक नियम'* लेख के लेखकगण स्तालिन के इस विश्लेषण की सत्यता पर विवाद खड़ा करते हुए कहते हैं-"उनकी यह प्रस्थापना भी समान रूप से गलत थी कि अग्रणी पूंजीवादी देशों में उत्पादन की कुल मात्रा... युद्धोत्तर काल में घटनी लाजिमी थी।"

बिल्कुल शुरू में ही हम इन लेखकों से यह पूछना चाहेंगे कि उन्हें यह कहां से पता चला कि स्तालिन ने यह टिप्पणी की थी कि ''... उत्पादन की कुल मात्रा... युद्धोत्तर काल में घटनी लाजिमी थी''? स्तालिन ने ऐसी टिप्पणी नहीं की थी, कम-से-कम उपरोक्त पैराग्राफ में कतई नहीं, जिसमें उन्होंने यह टिप्पणी की थी, कि ''हालांकि इन देशों में उत्पादन का विस्तारीकरण और भी संकुचित आधार पर जारी रहेगा क्योंकि उत्पादन की

मात्रा (''*कुल मात्रा*'' नहीं) घटती जायेगी (''*घटनी लाजिमी थी*'' नहीं)। यह कैसी नीति-नैतिकता है कि उस टिप्पणी के लिए स्तालिन की आलोचना की जा रही है जो उन्होंने वास्तव में कभी की ही नहीं थी? क्या यह तथ्यों की तोड़-मरोड़ नहीं है? शायद ये लोग स्तालिन को शिकस्त देने के अपने अति उत्साह में यह गौर करने में चूक गये कि स्तालिन ने वास्तव में क्या टिप्पणी की थी और वास्तव में क्या नहीं की थी।

इसके अलावा, ये लेखक जहाँ स्तालिन के इस विश्लेषण की सत्यता पर विवाद खड़ा कर रहे हैं वहीं उनकी टिप्पणी के एक भाग को यानी उत्पादन की मात्रा के बारे में उनकी टिप्पणी को (और वह भी तोड़-मरोड़ करने के ढंग से) शेष भाग से अलग करके ले लिया है और उनकी टिप्पणी के शेष भाग पर पूरी तरह से उन्होंने चुप्पी साध ली है। लेकिन सभी सहमत होंगे कि ''....उत्पादन की मात्रा घटती जायेगी''-अपनी इस टिप्पणी से स्तालिन का आशय क्या था, अगर कोई इसके असली तात्पर्य को समझने का इच्छुक है तो उसे इसको उस टिप्पणी के शेष भाग के साथ सही संदर्भ में समझने की कोशिश करनी होगी जिसके साथ यह स्तालिन की पुस्तक *सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं* से ऊपर उद्धृत लेखांश में अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है। लेकिन यह करने के बजाय अगर कोई इसे टिप्पणी के शेष भाग से अलग कर दे और वह भी तोड़-मरोड़ के ढंग से और फिर अलग-थलग हो जाने पर यह जो अर्थ रखती है उसे समझने की कोशिश करें, जबकि मात्र इसके साथ ही यह अर्थपूर्ण है तो जैसाकि इन लेखकों ने कोशिश की, यही नहीं कि कोई इस टिप्पणी के वास्तविक तात्पर्य को गलत समझेगा बल्कि यह स्तालिन ने जो टिप्पणी की थी उसके बारे में भ्रांत धारणा पैदा करने की इरादतन कुचेष्टा करने के तुल्य होगा।

इसके अलावा, हम यह टिप्पणी किये बिना नहीं रह सकते कि ये स्वयंभू सिद्धांतकार, *बुनियादी आर्थिक नियम* लेख के लेखकगण स्तालिन की प्रस्थापना में दोष निकालने के अपने उन्मत्त प्रयास में उस तर्क को भी नोट करने में नाकाम रहे हैं जो स्तालिन ने अपनी टिप्पणी में वस्तुत: पेश किया था।

औसत बुद्धिवाला कोई भी इंसान इस बिंदु को समझने में नाकाम नहीं होगा कि स्तालिन ने यह टिप्पणी कभी नहीं की कि उत्पादन की मात्रा किसी पूंजीवादी देश-विशेष में किसी एक निश्चित समयावधि के लिए भी, उद्योग की किसी भी शाखा में किन्हीं भी हालातों में कभी बढ़ ही नहीं

सकती। उनके कथन का वास्तव में जो अभिप्राय था वह यह था कि विश्व पूंजीवाद के आम संकट के तीसरे दौर में, पूंजीवाद उत्पादन की वृद्धि की उस दर को बनाये रखने में विफल होगा जिसे वह 1930 के विश्वव्यापी मुद्रा-संकट के बाद भी बनाये रख सका था, और, एक आम लाक्षणिकता के तौर पर, वृद्धि की दर धीरे-धीरे गिरावट का रुझान दिखायेगी। निश्चित ही, यह टिप्पणी पहले ही यह मानकर कतई नहीं चलती कि किसी भी पूंजीवादी देश में उद्योग की किसी भी शाखा में कुछ समयावधि के लिए भी कृत्रिम उद्दीपनों और प्रोत्साहनों सहित अल्पस्थायी कारकों के प्रभाव के तहत उत्पादन की अल्पकालिक वृद्धि भी नोट नहीं की जा सकेगी। लेकिन कृत्रिम उद्दीपनों सहित ये अल्पस्थायी कारक आने वाले हर समय के लिए क्रियाशील नहीं रह सकते। वे एक दिन नि:शेषित हो जाने निश्चित हैं और वृद्धि की दर (उत्पादन की मात्रा नहीं) अधोगामी रुझान दर्शाने को बाध्य है। इसी अर्थ में और वर्तमान दिनों के पूंजीवाद की इसी आम लाक्षणिकता की व्याख्या करने के लिए ही स्तालिन ने यह टिप्पणी की थी कि ''उत्पादन की मात्रा घटती जायेगी।'' यह वास्तव में दयनीय बात है कि हमारे 'सिद्धांतकार' दोस्त, *बुनियादी आर्थिक नियम* लेख के लेखकगण जिस तरह स्तालिन के कथन के असली तात्पर्य को गहराई से समझ पाने में विफल रहे, उसी तरह वे दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद इन बड़े-बड़े पूंजीवादी देशों में ठहराव व गिरावट के रुझान आमतौर पर विद्यमान होने के बावजूद भी, वहां उत्पादन की मात्रा में अल्पकालिक बढ़ोतरी के दिखाई देने वाले रुझान के पीछे निहित कारण या कारणों को समझ पाने में भी विफल रहे और इसने उन्हें स्तालिन की प्रस्थापना को गलत करार देकर नामंजूर करने के लिए प्रवृत्त कर दिया।

इसके अलावा, जब स्तालिन ने कहा कि बड़े-बड़े पूंजीवादी देशों में उत्पादन की मात्रा घटती जायेगी तो उनके विचार में था भावी घटनाक्रम, एकल सर्वसमावेशी विश्व पूंजीवादी बाजार के विघटित होने और एक तरफ समाजवादी व्यवस्था व समाजवादी बाजार के सृजन व दूसरी तरफ इस पहले से ही संकुचित बाजार में नवोदित राष्ट्रीयतावादी देशों के प्रवेश से शोषण के क्षेत्र के और भी सिकुड़ जाने का संभावित परिणाम। संभावना तात्कालिक वास्तविकता नहीं होती है। संभावित परिणाम और विद्यमान वास्तविकता के बीच हमेशा एक मध्यवर्ती अवधि होती है। इन पूंजीवादी देशों में उत्पादन की मात्रा में कोई भी वृद्धि वाजिब संदेह

से परे यह सिद्ध नहीं कर देती कि भविष्य में इसमें कोई भी गिरावट आयेगी ही नहीं।

इतना ही नहीं, इन बड़े-बड़े पूंजीवदी देशों में उत्पादन की मात्रा में वृद्धि चार कारकों की वजह से होती है-(1) अर्थव्यवस्था का सैन्यीकरण और हथियारों की होड़; (2)अचल यानी स्थायी जमा पूंजी का पुन: नवीनीकरण जो पहले से आकांक्षित था; (3) युद्ध के फौरन बाद की अवधि में प्रतिद्वन्द्वी के रूप में जर्मनी, जापान और इटली की अनुपस्थिति के कारण अधिकाधिक आर्थिक विस्तारीकरण; और (4) इन देशों में पूंजीपतियों द्वारा मजदूर वर्ग के शोषण का तीव्रीकरण। निस्संदेह इनमें से अधिकांश कारक अल्पकालिक कृत्रिम उद्दीपन हैं जिनका हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं और इसलिए ये भविष्य में हमेशा क्रियाशील नहीं रह सकते। एक न एक दिन उनका नि:शेषित हो जाना और फलस्वरूप उत्पादन की मात्रा में गिरावट आना निश्चित है।

ख्रुश्चेव ने बीसवीं कांग्रेस में अपनी रिपोर्ट में इसी स्थिति की कल्पना की थी जब उन्होंने कहा था कि ''आज पूंजीवादी दुनिया एक ऐसे मुकाम पर पहुंचती जा रही है जब कई अल्पकालिक कारकों की उद्दीपकारी क्रिया नि:शेषित होती जा रही है। कुछ तो, जैसे कि उदाहरण के लिए अचल पूंजी का बड़े पैमाने पर पुन: नवीनीकरण और विदेशी बाजारों में अनुकूल स्थिति के कारक सिर्फ भीषण और लंबे युद्ध के तत्काल बाद की अवधि के दौरान ही क्रियाशील थे। आमतौर पर दूसरे कारक उत्पादन में अल्पकालिक वृद्धि लाने में ही सक्षम हैं। पूंजीवादी अर्थव्यस्था की अंदरूनी शक्तियों की क्रियाशीलता, जिसके आधार पर वह अतीत में उत्पादन बढ़ाने में सफल हुई थी, अधिकाधिक कमजोर पड़ती जा रही है। आज उत्पादन को बढ़ाने के लिए पूंजीवाद को कृत्रिम उद्दीपनों की अधिकाधिक जरूरत है।'' ख्रुश्चेव के उपरोक्त विश्लेषण का तार्किक रूप से स्वाभाविक परिणाम यही निकलता है कि बड़े-बड़े पूंजीवादी देशों में उत्पादन की मात्रा देर-सवेर घट जाने को बाध्य है; सब कुछ के बावजूद ऐसा होकर ही रहेगा। स्तालिन की भी तो यही प्रस्थापना है। ख्रुश्चेव की उपरोक्त टिप्पणी से कम-से-कम एक चीज तो शीशे की तरह साफ है। स्तालिन को शिकस्त देने के अपने अति उत्साह में ख्रुश्चेव यह समझने में विफल रहे कि स्तालिन की प्रस्थापना का मुकाबला करने के लिए खुद उन्होंने जो वस्तुगत तथ्य पेश किये हैं और टिप्पणियां की हैं वे दरअसल खुद उन्हीं के खिलाफ गयी हैं और उन्होंने स्तालिन की थीसिस को

सही सिद्ध किया है! न ही ख्रुश्चेव और न उनके अति उत्साही चेले, तथाकथित 'सिद्धांतकार' *बुनियादी आर्थिक नियम* के लेखकगण जो स्तालिन का खंडन करने के लिए उनके खिलाफ ख्रुश्चेव के प्रवचनों और कथनों की बार-बार बड़ी तोता रटंत करते हैं, वे कभी यह समझ ही नहीं पाये कि अपने इस उस्ताद सहित खुद भी वे स्तालिन और उनकी टिप्पणियों का विरोध करते हुए ऐसी मुश्किल स्थिति में फंस सकते हैं।

इस बारे में कुछ और बातों पर भी चर्चा करनी चाहिए। सीपीएसयू की बीसवीं कांग्रेस में पेश की गई अपनी रिपोर्ट में ख्रुश्चेव ने और उक्त कांग्रेस से पहले अपने भाषण में मिकोयान ने उपरोक्त लेखांश का परोक्ष रूप से उल्लेख किया था और यह इंगित किया था कि पूंजीवाद के आम संकट से स्तालिन का आशय था उत्पादन और तकनीकी प्रगति में संपूर्ण ठहराव और विराम। यह सच्चाई का मजाक उड़ाना है। *सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं* नामक स्तालिन की कृति में उपरोक्त लेखांश–''इन देशों में उत्पादन का विस्तार एक तंग दायरे में बढ़ता जायेगा'' में पाये जाने वाले ये शब्द उत्पादन में संपूर्ण ठहराव और विराम का खंडन करते हैं। उल्टे, ये शब्द तो उत्पादन के विस्तार और साथ ही उत्पादन की प्रकृति यानी ठहराव के रुझान को दर्शाते हैं। ये लेनिन के निरूपण से बिल्कुल मेल खाता है। लेनिन ने अपनी कृति *साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था* में कहा था–''जैसा कि हम देख चुके हैं, साम्राज्यवाद की सबसे गहरी आर्थिक नींव इजारेदारी है। यह पूंजीवादी इजारेदारी है, अर्थात ऐसी इजारेदारी है जो पूंजीवाद से उत्पन्न हुई है और पूंजीवाद, माल-उत्पादन तथा होड़ के सामान्य परिवेश में रहती है और सामान्य परिवेश के साथ उसका स्थायी तथा असमाधेय विरोध रहता है। फिर भी हर इजारेदारी की तरह यह भी अनिवार्य रूप से ठहराव तथा ह्रास की प्रवृत्ति को जन्म देती है। चूंकि, अस्थायी रूप से ही सही, इजारेदाराना कीमतें स्थिर हो जाती हैं, इसलिए कुछ हद तक तकनीकी उन्नति और फलस्वरूप हर उन्नति की प्रेरक शक्ति खत्म हो जाती है और फलतः तकनीकी उन्नति की रफ्तार को जानबूझकर धीमा कर देने की आर्थिक संभावना उत्पन्न हो जाती है। ... इसमें कोई संदेह नहीं कि पूंजीवाद के अंतर्गत इजारेदारी विश्व बाजार में होड़ को कभी भी पूरी तरह और बहुत दीर्घकाल के लिए खत्म नहीं कर सकती (और प्रसंगवश बता दें कि अति-साम्राज्यवाद का सिद्धांत बेतुका होने का यह भी एक कारण है)। निस्संदेह तकनीकी सुधारों का उपयोग करने से उत्पादन की

लागत में कमी और मुनाफे में वृद्धि की संभावना परिवर्तन की दिशा में क्रियाशील रहती है। परंतु ठहराव और ह्रास की प्रवृत्ति, जो इजारेदारी की लाक्षणिकता है, अपना काम करती रहती है और उद्योगों की कुछ शाखाओं में, कुछ देशों में, कुछ समय के लिए उसका पलड़ा हावी हो जाता है।'' (लेनिन-साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था, (पृष्ठ 120-121, अंग्रेजी)। यह स्थिति तब थी जब पूंजीवाद पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा तेजी से विकास करता जा रहा था, जब पूंजीवादी बाजार को सापेक्ष स्थायित्व प्राप्त था। अब दूसरे विश्व युद्ध के बाद एक तरफ समाजवादी व्यवस्था और समाजवादी बाजार के सृजन और दूसरी तरफ पहले से संकुचित बाजार में नवोदित राष्ट्रीयतावादी देशों के प्रवेश से परंपरागत बाजार के सिकुड़ने की वजह से पूंजीवादी बाजार के सापेक्ष स्थायित्व के संपूर्ण अभाव को अलग से पहचाना जा सकता है, विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के आम संकट के और ज्यादा गहराने के बाद उद्योग की ज्यादा शाखाओं में पहले से और भी लंबी अवधि के लिए ठहराव और ह्रास की प्रवृत्ति और भी ज्यादा साफ उजागर हो गई है। क्या यह प्रमुख पूंजीवादी देशों में उत्पादन की मात्रा में गिरावट की संभावना को सूचित नहीं करती है?

राजनैतिक अर्थशास्त्र में स्तालिन का योगदान

बुनियादी आर्थिक नियम के लेखकों ने स्तालिन पर ''सामाजिक विज्ञानों में शोध कार्यों के लिए घोर प्रतिकूल परिस्थितियां पैदा करके, समाजवाद के अर्थशास्त्र की प्रगति को धीमा करने'' का इलजाम लगाया है। दुनिया भर में कम्युनिस्ट लाभांवित हुए होते यदि इन लेखकों ने कुछ उदाहरण देकर यह स्पष्ट किया होता कि कैसे स्तालिन ने राजनैतिक अर्थशास्त्र की प्रगति को धीमा किया और कैसे सामाजिक विज्ञानों के शोधकार्य के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां पैदा कीं। उन्होंने किसी भी बात को स्पष्ट रूप से साबित करने के तरीके को ही बड़े बेईमानीपूर्ण ढंग से दरकिनार कर दिया और कीचड़ उछालने और गाली-गलौज करने का रास्ता अपनाया है। हम समझ नहीं पा रहे हैं कि यदि उनका आरोप आंशिक रूप से भी सही होता तो कॉमरेड्स एल.डी. यरोशेंको, ए.वी. सनीना, वी.जी. वेंझर, ए.आई. नोटकिन और अन्य लोग स्तालिन के खिलाफ समाजवाद के राजनैतिक अर्थशास्त्र पर अपने-अपने मत के समर्थन में वैचारिक संघर्ष खुले आम भला कैसे चला सके? अगर स्तालिन द्वारा सामाजिक विज्ञानों में

शोधकार्य मुश्किल कर दिये गये थे तो स्तालिन ने राजनैतिक अर्थशास्त्र पर पाठ्यपुस्तक के प्रारूप को सुधारने के लिए नियुक्त समिति में अपने मत का समर्थन करने वाले व्यक्तियों को ही क्यों नहीं भर दिया। उल्टे, उन्होंने ''इसमें न केवल इस पाठ्यपुस्तक के लेखकों एवं समथर्कों को बल्कि विरोधियों को-चर्चा में अधिकांश भागीदारों के रूप में, पाठ्यपुस्तक के प्रारूप के घोर से घोर 'आलोचकों को भी शामिल करने की क्यों सिफारिश की थी? (*सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं*, पृ. 52, अंग्रेजी)। अगर स्तालिन ने समाजवाद के अर्थशास्त्र की प्रगति को धीमा किया होता तो सोवियत संघ उनके नेतृत्व में साम्यवाद की ओर इतनी शानदार प्रगति कैसे कर सका? इसमें कोई संदेह नहीं कि आम तौर पर व्यक्तिपूजा और खास तौर पर स्तालिन-पूजा ने साम्यवादी आन्दोलन को बेहिसाब नुकसान जरूर पहुंचाया है। सभी मानते हैं कि साम्यवाद विरोधी इस पूजा के मूल कारण को अवश्य ही दूर किया जाये।

लेकिन ऐसा करने का तरीका स्तालिन की कृतियों को पूर्णतया नामंजूर करना नहीं है। अगर उनके निरूपणों में कोई त्रुटि है तो उसे मार्क्सवादी द्वन्द्वात्मक तर्क-पद्धति से परिपुष्ट रोशनी में सामने लाना चाहिए। मनगढ़ंत पांडित्यपूर्ण फिजूल की बातों और जनोत्तेजक दावों से मामला सुलझेगा नहीं। लेकिन अफसोस की बात है कि *बुनियादी आर्थिक नियम* के लेखकों ने स्तालिन को बदनाम करने के लिए यही रास्ता अपनाया है। उदाहरण के लिए, स्तालिन के निरूपण से अपनी असहमति दिखाने के लिए उन्होंने लेनिन की यह टिप्पणी उद्धृत की है कि ''हम साम्यवाद की तभी कद्र करते हैं जब वह पुख्ता आर्थिक बुनियाद पर खड़ा हो।'' क्या धरती पर ऐसा कोई आदमी है जो इससे स्तालिन की गलती तो दूर रही, स्तालिन के साथ इन लेखकों की असहमति को भी समझ जाये? उन्होंने ''पुख्ता आर्थिक बुनियाद'', ''समाजवाद के साम्यवाद में विकास को नियंत्रित करने वाले लेनिनवादी नियमों'', ''समाजवादी उत्पादन के वस्तुगत लक्ष्य की समस्याओं की रचनात्मक व्याख्या'' जैसी गुंजायमान अभिव्यक्तियों को नफरत फैलाने की हद तक दोहराया है लेकिन इनके ठोस अभिप्रायों के बारे में, और कैसे स्तालिन ने उस पुख्ता आर्थिक बुनियाद को पतित किया या कैसे ''लेनिनवादी नियमों आदि'' का उल्लंघन किया-इस बारे में पूरी तरह चुप्पी साधे रखी। क्या ये लेखकगण यह दिखाने के लिए एक भी उदाहरण पेश कर सकते हैं कि उन्होंने स्तालिन द्वारा प्रतिपादित समाजवाद के बुनियादी आर्थिक सिद्धांतों को विकसित किया हो और उनसे आगे गये हों?

स्तालिन द्वारा प्रतिपादित समाजवाद के महत्त्वपूर्ण और बुनियादी सिद्धांतों को विकसित करना तो दूर रहा, वे न केवल उन सिद्धांतों से आगे जाने में ही विफल रहे बल्कि इसके अतिरिक्त जब कभी वे इन्हें सुधारने और विकसित करने की कोशिश करते हैं तो वे गंभीर गलतियां कर बैठते हैं। इस प्रकार, उन्होंने स्तालिन की प्रस्थापना की सत्यता को नकारने और उससे आगे जाने के अपने प्रयास में समाजवादी अर्थव्यवस्था की इस महत्त्वपूर्ण लाक्षणिकता कि मांग उत्पादन से ज्यादा होती जाती है, को नामंजूर करके बड़ी भारी गलती कर डाली है और इससे उन्होंने समाजवादी अर्थव्यवस्था खासकर कृषि अर्थव्यवस्था को ही खतरे में डाल दिया है। खासकर माल परिचलन के क्षेत्र को अधिकाधिक संकुचित करने की बजाय विस्तृत करने और साथ ही साथ उत्पाद-विनिमय के क्षेत्र को अधिकाधिक विस्तृत करने के बजाय संकुचित करने तथा प्रोत्साहन-प्रलोभन (इन्सेन्टिव) देने के उपायों आदि के साथ-साथ अन्य जिन सब रास्तों पर ख्रुश्चेव और ये तथाकथित सिद्धांतकार चल रहे हैं वे संशोधनवाद को जन्म देने और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने के रुझान की बढ़ोतरी का मार्गप्रशस्त करने के खतरनाक परिणामों से भरे हुए हैं।

पूर्वाग्रह स्तालिन के सही मूल्यांकन को क्षति न पहुंचा पाये। उनकी रचनाओं का बार-बार अध्ययन-मनन किया जाये, उनमें कोई कमी और खामी हो तो उसे सही और सटीक रूप से दिखाया जाये और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के ज्ञान भंडार को और भी समृद्ध किया जाये। वर्ग और जनगण को शिक्षित करने और कम्युनिस्टों की वैचारिक चेतना के स्तर को उन्नत और बेहतर बनाने का सिर्फ यही एक तरीका है।

सोशलिस्ट यूनिटी में सितंबर 1962 में
पहले पहल प्रकाशित।